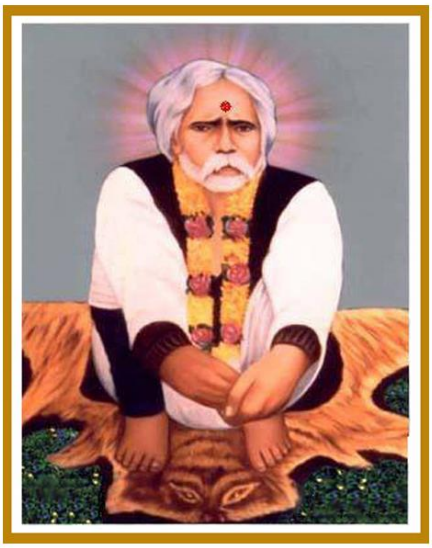

OM SHRI GURU PARAMATMANE NAMAH

MANOHAR JIVAN DARSHAN

SHRI SHRI 1008 SHRI MANOHAR DAS AGHORI

जनम (प्रगटीकरण) - Birth (Manifestation)
भाद्रपद शुक्ला - Bhadrapada Shukla
जलझुलनी एकादशी - Jaljulni Ekadashi
रात्रि ११ बजे पुष्य नक्षत्र में - 11 pm in the constellation Pushya
सम्वत् १९५२ (सन् 1894) - Samvat 1952 (AD 1894)

सत्यलोकवास (निर्वाण) - Satyalokwas (Nirvana)
अगहन सुदी ६ मंगलवार - Agahan Sudi 6 Tuesday
सुबह ५ बजे - 5 am
सम्वत् २०१५ (16 दिसम्बर 1958) - Samvat 2015 (16 December 1958)

WWW.AGHORI.IT

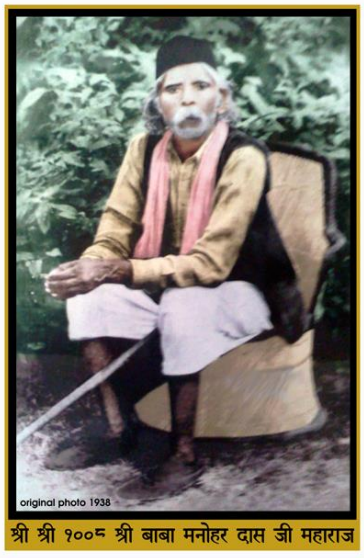

श्री श्री १००८ श्री बाबा मनोहर दास जी महाराज

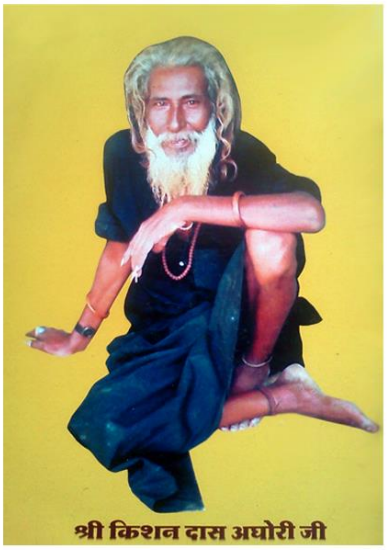
श्री किशन दास अघोरी जी

This book is the cleaning job done on photocopies of an original book,
now unobtainable, recovered by Radhika Dasi Aghori.
Some parts of the book were not legible necessitating a restoration.

In memory of Baba Manohar Das Ji, Baba Kishan Das Aghori guru's.

With love and devotion
Govinda Das Aghori

Questo libro è il lavoro di pulizia fatto su delle fotocopie di un libro originale,
ormai introvabile, recuperato da Radhika Dasi Aghori.
Alcune parti del libro non erano ben leggibili rendendo così necessario un restauro.

In ricordo di Baba Manohar Das Ji guru di Baba Kishan Das Aghori.

Con amore e devozione
Govinda Das Aghori

उत्तराधिकारी खण्ड

ॐ गुरु परमात्मने नमः

बाबा के उत्तराधिकारी

श्री श्री 1008 बाबा नारायण दास जी महाराज मन्दिर के संस्थापक-और बाबा के उत्तराधिकारी

श्री नारायणसिंह (इन्दौलिया) उत्तर प्रदेश किरावली के पास मुडियापुरा गाँव के निवासी थे। भरतपुर कोतवाली में कोतवाल थे। वैर के थाने पर थानेदार बनकर आये। बाबा श्री मनोहर दास जी महाराज में उनकी अपार श्रद्धा थी। वह अक्सर बाबा के धुने पर आया-जाया करते थे। बाबा भी थाने पर जाकर अपना धुना लगाया करते थे। बाबा दरोगा नारायणसिंह जी जो अक्सर दरबार कहकर पुकारा करते थे। एक बार रात्रि को लगभग एक बजे नारायण सिंह जी गस्त के लिए निकले बाबा उस समय धुने के पूर्वी द्वार पर चबूतरे पर सिंहासन से बैठे हुए थे। नारायण सिंह ने बाबा को दण्डवत कर और आगे बढ़ने लगे। बाबा उनसे बोले दरबार कहाँ जाते हो? बैठे वे बोले–"बाबा अभी आता हूँ गस्त लगानी है। बाबा ने पुनः आग्रह किया लेकिन वे नहीं माने और गस्त के लिए आगे बढ गये। किले के नीचे रास्ते में उन्होंने देखा कि बाबा मनोहर दास पड़े हुए हैं उनका सिर हाथ, पैर, धड़, अलग-अलग पड़ा हुआ है। दरोगा नारायण सिंह को बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि अभी-अभी वह बाबा को अपने धुने के चबूतरे पर बैठा छोड़कर आये थे। वे तुरन्त लौटे और बाबा को उसी स्थान पर पूर्व बैठे हुए पाया। दरोगा नारायण सिंह ने बाबा के चरणों में दण्डवत् प्रणाम किया। वे बाबा के आलौकिक चमत्कार से बड़े भारी प्रभावित हुए। उसी दिन अपनी पुलिस की वर्दी उतार कर बाबा के चरणों में रख दी और उनके शिष्य हो गये। बाबा ने उन्हें सात नाम की दीक्षा प्रदान की अब वे नारायण सिंह से नारायण दास हो गये थे। उल्लेखनीय है कि श्री नारायण दास जी ने बाबा की बहुत सेवा की, बाबा का अन्तिम संस्कार भी नारायण दास जी के द्वारा किया गया। बाबा ने अपने समय में ही उन्हें अपनी तपोस्थली (धुना) का उत्तराधिकारी बना दिया था। बाबा के ब्रह्म लीन होने के पश्चात् उनके समाधि स्थल पर एक भव्य मन्दिर के निर्माण की योजना, एक औषधालय तथा एक पुस्तकालय की योजना राजा श्री गजेन्द्र सिंह जी के साथ मिलकर उन्होंने बनाई और उसके नक्शे बनवाये गये। वर्तमान में जो मन्दिर बाबा मनोहर दास जी महाराज का बना हुआ है तथा वर्तमान में जहाँ आयुर्वेदिक औषधालय चला हुआ है। उसका निर्माण उन्हें के बनाये नक्शे पर किया गया है। उन्होंने अपने हाथ से इस मन्दिर की नींव रखी। मजबूत कंकरीट की नीवें भरवाई गयीं। मन्दिर दासे से ऊपर पहुँच गया। समाधि को पक्का बनवा दिया गया। मन्दिर के नक्शे के अनुसार समाधि की तीन परिक्रमाएँ थीं। एक अन्दर जगमोहन में समाधि के चारों ओर दूसरी समाधि से बाहर वर्तमान परिक्रमा तथा तीसरी मन्दिर से बाहर जहाँ पर लोहे का फाटक लगा हुआ है। वहाँ होकर

जाती थी। अब ये तीसरी परिक्रमा प्रायः बन्द हो चुकी है। इस प्रकार मन्दिर निर्माण का प्रारम्भिक और महत्त्वपूर्ण कार्य श्री नारायणदास जी द्वारा सम्पन्न कराया गया। वे प्रातः सायंः समाधि की पूजा बड़े भक्ति भाव से शंख झालर की ध्वनि के साथ किया करते। अनेकों लोगों का समुदाय तथा छोटे-छोटे बच्चे गुरु देव की सायं कालीन प्रार्थना में सम्मिलित हुआ करते थे। बाबा मनोहर दास की जयकारों से बस्ती का प्रत्येक कौना गूंजता रहता था। बड़ी ही भक्ति मयी परिवेश था। हम भी प्रायः उस प्रार्थना में नित्य नियम से सम्मिलित होते और बाबा की प्रार्थना इस प्रकार किया करते थे।

गुरु वन्दना

ॐ गुरु देव ब्रह्म सच्चिदानन्द स्वरूप

आनन्द दाता कल्याणकारी, अग्नि में ज्योति में, प्रकाश में, अजर अमर अविनाशी घट-घट के वासी

निराकार निर्विकार, सर्वाधार, अर्न्तयामी, अलख निरंजन, भव भय भंजन,

संकट मोचन वनवारी। देवेश्वर, योगेश्वर, प्राणेश्वर, परमेश्वर, ईश्वर।

ॐ गुरुदेव ब्रह्म, सच्चिदानन्द स्वरूप,

आनन्द घन भगवान् नमो नमः॥

॥ श्री गुरु देव नमः ॥

इस प्रकार अनेक वर्षों तक अपने गुरुदेव की पूजा प्रार्थना मन्दिर व्यवस्था का कार्य श्री नारायण दास जी द्वारा किया गया। उनका स्थाई निवास बाबा की तपोस्थली (धुना) पर ही था। अपने संस्मरण में सुनाया करते थे कि एक बार रात्रि के समय गुरुदेव अपने धुना पर विराजमान थे। पास में मैं (नारायण दास) बैठा हुआ था तो मैंने देखा कि गुरुदेव के चार मुख दिखाई दिये। मुझे साक्षात ब्रह्मा रूप में दर्शन दिये। इसके अलावा एक बार लगभग रात्रि 9 बजे सीते दरवाजे बाहर बावड़ी में मुझे ले गये। मैं समझ न सका कि गुरुदेव इस समय कहाँ जा रहे हैं। मैं पीछे-पीछे चलता रहा। अंधेरी रात थी। नर्जन जंगल था। अचानक गुरुदेव रुके और आकाश की ओर इशारा किया बोले–"दरबार देखो" क्या दिखाई देता है। मुझे पहले आकाश मे तेज रोशनी दिखाई दी। मेरी आँखें मिच गयीं लेकिन पुनः खोलने पर आकाश में सिंह पर सबार अष्ट भुजा की देवी का दर्शन हुआ। थोड़ी देर बाद वह रूप अर्न्तध्यान हो गया। इस प्रकार की आलौकिक घटनाएँ गुरुदेव ने अन्य लोगों को भी समय-समय पर दिखलाई थी। उल्लेखनीय है कि कुछ समय पश्चात् श्री नारायण दास जी को आंखों से कम दिखाई देने लगा। पूजा सेवा में भी परेशानी का अनुभव होने लगा। किरावली से उनके बच्चे यहाँ आकर उन्हें गाँव चलने के लिए

आग्रह करने लगे। लेकिन उन्होंने यहीं रहकर गुरु दरबार में पड़े रहने का मन्तव्य जाहिर किया। अधिक आग्रह करने पर और अपनी वृद्धावस्था ध्यान में रखते हुए वे उनके साथ अपनी जन्म भूमि मूडियापुरा, (किरावली, उत्तरप्रदेश) चले गये और उनकी वहीं जीवन लीला समाप्त हो गयी।

श्री श्री 1008 बाबा कुन्दन दास जी महाराज

कस्बा बयाना के पास स्थित महलौनी ग्राम में एक सम्भ्रान्त गुर्जर परिवार में एक बालक का जन्म हुआ जिसका नाम भगवत सिंह रखा गया। बाल्यकाल से ही ये शुद्ध सात्विक वृति के थे। खान-पान आचार-विचार आदि में सात्विकी वृति थी। इनकी शिक्षा अधिक नहीं हो पायी। कक्षा 1 या 2 के पश्चात् इन्होंने अपना अध्ययन बन्द कर दिया। इनके घर में अनेकों ऊंट घोड़े घोड़ियाँ एवं भैंस गाय अनेक प्रकार की पशु सम्पत्ति तथा धन धान्य सम्पन्न परिवार था। वे बताया करते थे कि हम घोड़ियों को सोने के जेवर से सुसज्जित करके मेले-ठेले, जात, बरात में जाया करते थे। इसी से सिद्ध होता है कि वह एक सम्पन्न परिवार में जन्मे थे। उनका शरीर बलिष्ट था। ये आजीवन ब्रह्मचारी रहे। बहुत आग्रह करने पर भी इन्होंने शादी नहीं की। नेताजी सुभाष चन्द बोस के आह्वान पर ये अन्य गुर्जर नव युनवकों के साथ आजाद हिन्द फौज में भर्ती हो गये और अपनी मातृ भूमि भारत माता की सेवा में उसे पराधीनता की वेडियों से मुक्त कराने तथा अंग्रेजों की इस देश की भूमि छोड़ने को विवश कर दिया। फौज में भी इनका रहन-सहन खान-पान शुद्ध सात्विक रहा। अपने फौजी संस्मरणों में बाबा कुन्दन दास ने मुझे बताया कि "लंगर में भोजन न करने के कारण मेरा एक सिख कर्नल से झगड़ा हुआ, जिसमें मैंने उसे बहुत बुरी तरह से पीटा। बात यह थी कि वह फौजी नियमानुसार मुझे लंगर में भोजन करने के लिए बाध्य करता था और मैं लंगर मे ष्याज लहसुन एवं मांस पकाये जाने की वजह से भोजन करने में असमर्थ था अधिकारी से झगड़ने की वजह से मेरा कोर्ट मार्शल किया गया और अनुशासनात्मक कार्यवाही की गई। लेकिन मेरी प्रार्थना पर विचार करके और मेरी वृत्ति को ध्यान में रखकर मुझे स्वयं भोजन बनाकर पाने की अनुमति प्राप्त हो गयी। इस प्रकार इन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी अपनी धर्मनिष्ठा को नहीं छोड़ा। कुछ समय पश्चात् जब आजाद हिन्द फौज का विघटन हुआ तो वह जन्मभूमि वापिस आ गये।

गुरुदेव बाबा मनोहरदास जी से मिलन प्रसंग

एक बार श्री श्री 1008 श्री बाबा मनोहरदास जी महाराज का आसन किशोर दास की बगीजी में तहसील के पास बयाना में लगा हुआ था। भक्तों का समुदाय बाबा के आस-पास विराजा हुआ था। उसी समय एक ऊंट पर बैठकर अपने अन्य साथियों के साथ भगवत सिंह नाम का यह नव युवक उस रास्ते से गुजर रहा था। बाबा की नजर उस पर पड़ी। बाबा ने उसे उसके पिता एवं पितामह का नाम

उच्चारण करते हुए अपने पास बुलाया। वह तुरन्त ऊंट से कूद पड़ा और अपने साथियों के साथ नीचे बगीजी में जहीं बाबा मुढे पर विराजे हुए थे उन्हें दण्डवत प्रणाम किया बाबा बोले–"छोरा! कहाँ भूला भटका फिरता है। आ मुझे गुरु मंत्र देंगे। ऐसा कहकर उसे पास बिठा लिया। बाजार से कुछ सामग्री मंगाई गई। मिठाइयों के साथ बाबा के आग्रह से दही की पकोड़ियाँ भी मंगवाई गयी। उल्लेखनीय है बाबा साहब को पकोड़ियाँ बहुत पसन्द थीं। भगतसिंह को बाबा ने सात नाम का मंत्र सुनाया और उनके साथियों से कह दिया है कि जाओ कह देना कि अब हमारा हो गया है। अब भगवत सिंह कुन्दन दास हो गया। यह नाम गुरु महाराज को दिया हुआ था। बाबा की सेवा में वह तन-मन-धन से लग गया बाबा के बताये हुए रास्ते से उन्होंने साधना प्रारम्भ की। सन् 1947 में साम्प्रदायिक देंगे हुए। वह सुनाया करते थे कि हुजूर के हुक्म से मैंने इन दंगों में दीन-हीन निरापराध लोगों की रक्षा करने एवं उनको सताने वाले लोगों की अपनी शक्ति सामर्थ से दण्ड दिया। कुन्दन दास के बारे में लोग कहा करते हैं कि इन साम्प्रदायकि दंगों में उसने शास्त्रों से सुसज्जित होकर सक्रिय रूप से भाग लिया। इसमें इनके हाथ से दस-बीस आतंककारियों को अपने प्राणों से हाथ धोने पड़े।

परम वैष्णव रूप–अन्त में कुन्दनदास ने अपने गुरुदेव की बहुत सेवा की समय-समय पर वे अपने गाँव से घी दूध एवं अन्य भेटें लाया करते थे।

एक दिन का प्रसंग है कि कुन्दन दास अपने गुरुदेव के लिए एक कुल्लड़ में दूध लाये। लेकिन बाबा साहब ने उसे लेने से इन्कार कर दिया और उसे अनेक प्रकार के कठोर शब्द कहे, जिनका यहाँ उल्लेख करना उचित नहीं होगा। कुन्दन दास को सुनाये। यहाँ तक कि अपने पास रखे डण्डे से 2 डण्डे उसकी पीठ पर मारे, तीसरा मारने लगे तो वह दूर हट गया। इस प्रकार बाबा श्री मनोहरदास जी ने अनेक प्रकार से उसे प्रताड़ित किया। बातों से अपमानित किया और अनेक प्रकार से उसे दण्डित किया। यह उसके धैर्य की परीक्षा थी। गुरु देव के इस प्रकार के कठोर व्यवहार से तंग आकर एक दिन वह अपना बिस्तर बांध कर जाने लगा और मन ही मन सोचने लगा कि "किसी साम्प्रदाय में जाता तो कुछ सीखने को मिलता कुछ ज्ञान होता। ऐसा कहकर वह चलने लगा। वहाँ उपस्थित श्री परसादी लाल छीपी ने उससे कहा कि शाला में होकर निकल कर जाओ क्योंकि बाबा अक्सर लोगों को इसी मार्ग से जाने को कहा करते थे।

उल्लेखनीय है कि शाला का दरवाजा कुछ नीचे था जिसमें लोगों को झुककर निकलना पड़ता था। कभी-कभी सीधे निकलने वालों व्यक्ति के सिर में चोट भी लग जाया करती थी। इससे ऐसा लगता है कि हुजूर प्रत्येक व्यक्ति को सिर नीचे करके चलने अर्थात् जीवन में नम्रता धारण करके संसारिक व्यवहार में प्रस्तुत होने का मानो उपदेश दिया करते थे। वह कहा करते थे।

दोहा– *नानक नन्ना हो चलो जैसी नन्ही दूब।*
और घास सब जरै जेठ में हरी रहत है दूब॥

अर्थात् ये हमें सभी प्रकार का त्याग कर नम्रता के साथ रहना सिखाते थे। जब कुन्दन दास उस रास्ते से गुजरने लगा तो शाला के पूर्वी द्वार पर अब लोगों ने उसे बन्द करवा कर दुकान बनवा दी है। आप बाहर चबूतरे पर बाबा विराजे हुए थे। वह चरण स्पर्श करके ज्योंही जाने लगा तो बाबा बोले–"मैंने तुझे वह ज्ञान दे दिया है जो तुझे चार सम्प्रदाय में भी नहीं मिलता कुन्दन दास के ज्ञान चक्षु खुल चुके थे उसे ज्ञात हुआ कि हुजूर की कठोरता में मेरा परम हित ही था। अब वह तप कर वास्तविक कुन्दन बन चुके थे। श्री नारायण जी के पश्चात् मन्दिर समाधि स्थल की देख रेख एवं विकास का कार्य बड़ी निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ कुन्दन दास जी महाराज ने किया। वे सच्चे दिल से प्रातः सायं बड़े भक्ति से अपने गुरुदेव की झालर शंखों से धूप दीप नैवेद्य आदि अर्पण करके विधिवत पूजा अर्चना किया करते थे।

विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि बाबा श्री श्री 1008 श्री बाबा मनोहरदासजी महाराज का अव्यात्मिक दर्शन अद्वैत वेदान्त से प्रभावित थे और उन पर भक्ति की ज्ञानाश्रयी शाखा का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता था उनकी दृष्टि में "सर्व खल्व इदं ब्रह्म" अर्थात् ईश्वर समस्त जड़ चेतन में समान रूप से व्याप्त हैं, वह घट-घट का वासी है। अतः मन्दिर मस्जिद घट-मठ इत्यादि को वे विशेष महत्त्व न देते थे। उनका अलख पुरुष अविनाशी प्रत्येक स्थान में व्याप्त ईश्वर था। वर्तमान मन्दिर की ओर इशारा करते हुए वह अपने धूने पर बैठे-बैठे कहा करते थे, यह संसार मुर्दे की पूजा करने वाला है।" कुन्दन दास से इस ओर इशारा करते हुए कहते थे कि नहर के ऊपर पीपल का पेड़ जो वर्तमान में मन्दिर के उत्तर दिशा में स्थित है, उसे काल चक्र बतलाया करते और कहा करते कि यहाँ मगर रहता है, बचकर रहना तुझे खा जाएगा तथा मन्दिर के सामने पूर्व दिशा की ओर धर्मशाला के सामने जो पीपल का पेड़ है उसे वे देवता भाव गति का विष्णु बतलाया करते। कुन्दन दास ने अपने गुरुदेव की वाणी के रहस्य को अच्छी प्रकार समझ लिया था। मन्दिर निर्माण में उसेसे जो पैसा लगाया वह पूर्ण भावगीत का था। जो भी श्रद्धापूर्वक दान देता उसे पूर्ण सत्य निष्ठा से मन्दिर के विकास में लगाया। एक पैसा भी अपने निजी उपयोग में लेना वह अपनी गुरु निष्ठा के विरुद्ध समझते थे।

बोल, कड़ाकड़ सीताराम-बाबा कुन्दन दास जी महाराज को हमने परमत्यागी रूप में देखा था, मात्र एक लंगोट आडबन्द हाथ में चिमटा, मोटा हस्टपुष्ट शरीर, दाढ़ी जटायुक्त मस्ती में "बोल कड़ाकड़ सीताराम" की घोष करते हुए गली मौहल्लों में घूमा करते तथा पीछे-पीछे छोटे-छोटे बच्चे कौतूहलवश लगे उनके साथ-साथ पुनरुच्चारण "बोल कड़ाकड़ सीताराम" करते रहते। इस तरह मैंने एक मस्त फकीर की तरह से रहनी-सहनी युक्त कुन्दन दास का महात्यागी रूप भी देखा था।

"बन्दगी से प्यार एवं भूखे को खिलाना– एक दिन बाबा कुन्दन दास से मैंने पूछा कि बाबा, आपको गुरुजी ने क्या शिक्षा दी, कोई महत्त्वपूर्ण बात जो बाबा श्री मनोहरदास जी महाराज ने आपको बतलाई हो, हमें भी सुनाओ।" इस प्रश्न के उत्तर में बाबा कुन्दन दास ने मुझे बतलाया कि "गुरु महाराज" ने मुझे दो बात बतलाई एक तो बन्दगी (भजन ध्यान) से प्यार रखना, दूसरी बात जिस पर वे बहुत जोर देते थे कि भजन ध्यान के साथ-साथ भूखी आत्मा को भोजन खिलाना।" मैंने कुन्दन दास जी महाराज की दिनचर्या को नजदीक से देखा था, मैंने ही क्या अधिकांश लोग उनकी दिनचर्या से परिचित थे। रात्रि को कुछ समय ही विश्राम करते जब लगभग 10 बजे सायं सारी वस्ती के लोग सो जाया करते तो आप अपने तख्त पर बैठे-बैठे भगवान का भजन करते लगभग प्रातः 3 या 3.30 पर आप अपना आसन छोड़ नित्य क्रिया से निवृत होकर जल की बाल्टी भरकर मंदिर में प्रवेश कर जाते सफाई करके गुरुजी को स्नान कराते तथा धूप दीप नैवेद्य चढ़ाकर पूजा करते शंख ध्वनि झालर घण्टे की ध्वनि से मंदिर परिसर के साथ छोटी काशी वैर का कौना-कौना गूंज उठता, शंख एवं झालर की ध्वनि सुनकर हमारे जैसे लोग अपने-अपने विस्तरों को छोड़कर अपने-अपने नित्यक्रिया कर्मों में लगते। कुछ श्रद्धालु नित्य नियम से इस पूजा में सम्मिलित होते–बड़े प्रेम से विविध स्तुतियाँ गुरु वन्दना बोली जाती लगभग 8 घण्टे तक पूजा अर्चना का कार्यक्रम होता। कुन्दन दास बाबा पूजा में प्रथम इसी गुरु वन्दना को बोलते जो स्वयं हुजूर बोला करते थे।

गुरु वन्दना

ॐ गुरु देव ब्रह्म सच्चिदानन्द स्वरूप

आनन्द दाता कल्याणकारी, अग्नि में ज्योति में, प्रकाश में, अजर अमर अविनाशी
घट-घट के वासी

निराकार निर्विकार, सर्वाधार, अर्न्तयामी, अलख निरंजन, भव भय भंजन,

संकट मोचन वनवारी। देवेश्वर, योगेश्वर, प्राणेश्वर, परमेश्वर, ईश्वर।

ॐ गुरुदेव ब्रह्म, सच्चिदानन्द स्वरूप,

आनन्द घन भगवान् नमो नमः॥

॥ श्री गुरु देव नमः ॥

इसी प्रार्थना को, बाबा नारायणदास जी महाराज (दरबार) जो कुन्दनदास जी के बड़े गुरुभाई थे और जो कुन्दनदास जी से पूर्व बाबा के मन्दिर में पूजार्चना

कार्य किया करते थे, भी बोला करते थे। पूजा पाठ के पश्चात् कुन्दनदास जी महाराज पुनः अपने आसन पर जो कि वर्तमान में मन्दिर उत्तर में स्थित पीपल के पेड़ के नीचे धर्मशाला में एक तख्त पर था आ बैठते, गाँजे की चिलम तैयार होती, भोग लगता –

"हुजूर लागै दम्

पहले गुरु पीछे हम॥

सुवह की सुर्खी खबर लावै, धुर की,।

"दमदार बेड़ा पार"

"ऐसी आवे हरि गुन गावै,

हाथी के हौदा पै, श्री कृष्ण नजर आवै।"

"याद रख, याद है तो, आबाद है,

भूल गया तौ, बरबाद है"

"गुरुनाम सच्चा, याद रख बच्चा,"

"धर्र रगड़ उसी को जो नहिं मानें किसी को।"

आदि चिलम स्त्रोत के उच्चारण बाद कुन्दन दास जी महाराज की चिलम लगती, इसके बाद कोई भगत चेतता, चाय, दूध या दही की लस्सी का भोग लगाता, लगभग दस ग्यारह बजे तक अपने आसन पर हुजूर के ध्यान में विराजे रहते, भगत जगत दर्शनार्थियों का आना-जाना लगा रहता है। विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि बाबा कुन्दनदास भजन बन्दगी प्रायः रात्रि के शान्त वातावरण में ही किया करते थे, दिन में वह अपने भजन बन्दगी का दिखावा नहीं करते थे क्यों कि यह उनके गुरुदेव की गुप्त हिदायत थी। बाबा महाराज न तो स्वयं अपने साधना भजन का प्रदर्शन करते थे और उनके अनुयायियों ने भी उनके इस निर्देश का अक्षरसः पालन किया। लोगों को ऐसे आचरण में नजर आते कि जाने ये "कोरे रोटी राम ही हैं।" लेकिन हमारी बस्ती के अधिकांश लोग जानते थे कि कुन्दन दास महात्मा को उनके गुरुदेव ने वास्तव में कुन्दन की बना दिया था। वे "सच्चे गुरु के लाल" थे। दोपहर, लगभग 12 बजे आप एक बड़ा थैला लेकर हाथ में एक डण्डा तथा लम्बा कुर्ता अचला पहने बस्ती में निकलते किसी दिन, एक मौहल्ले में किसी दिन दूसरे मौहल्ले में जाते, दरवाजे पर जाकर बैठ जाते और जोर से आवाज देते–"लाऔरी, छोरिऔ" बाबा की वाणी बड़ी तेजस्वी एवं कड़क थी, एक घर पर, आवाज लगती और प्रायः दो चार घरों में जानकारी हो जाती कि बाबा कुन्दनदास पधार चुके हैं, प्रत्येक घर के बच्चे स्त्रियाँ दो-दो, चार-चार रोटियाँ लेकर आते आप उनसे लेकर थैले में डालते जाते, इस प्रकार जब पूरा थैला रोटियाँ से भर जाता तो आप पुनः

अपने स्थान पर पहुँच जाते, रोटियों को बन्दरों कुत्तों को खिला दिया करते। इसके बाद आप स्वयं अपने हाथ से गुरुदेव के भोग हेतु टिक्कर बनाते तब स्वयं प्रसाद पाते यह उनके जीवन-चर्या का नित्य क्रम था। भजन एवं भूखे प्राणियों को भोजन कराना क्योंकि हुजूर बाबा प्रायः यह पद सुनाते थे–

दीन ताई दया और नम्रताई दुनिया बीच,

बन्दगी से प्यार राखि, भूखे को खिलाएगा।

चार बीसी चार से, बचेगा तू मेरे-यार,

साधुओं की संगत से, तू बड़ा सुख पायेगा॥

अतः अपने गुरु देव के वचन पालनार्थ, कुन्दन दास जी महाराज रोजाना मधुकरी हेतु विभिन्न गली, मौहल्लों में जाते। जब आप हमारे घर आते तो अन्दर प्रवेश कर जाने की एक सीढ़ी पर बैठ जाते ''छोरियों, लाओ'' आवाज को सुनकर मैं स्वयं अपने कमरे से बाहर निकलता तो बाबा के रूप के अनौखे दर्शन होते, पसोने से तर चेहरा, विशाल लालिमा लिए नेत्र ''बाबा सीताराम'' जवाब मिलता ''सीताराम'' फिर उन्होंने कैवेण्डर सिगरेट भेंट करता'' बड़े प्रेम से सिगरेट जलाते। उल्लेखनीय है कि हमारे हुजूर बाबा श्री मनोहर दास जी महाराज भी गांजे सुल्फे, के साथ कैवेण्डर की सिगरेटें ही प्रयोग में लेते थे, वैसा ही उनके चेले जी कुन्दन दासजी किया करते थे। मैं अपने पास कैवेण्डर की सिगरेट का पैकिट रखा करता क्योंकि वही एक मात्र उनके स्वागत की सामग्री थी। उनके दरवाजे पर आते ही हम पैकिट लेकर तथा माचिस लेकर निकलते नमस्कार सीताराम के बाद पहला वचन यही होता ''ला छोरा, सिगरेट पिला'' चाहे गर्मी हो, जाड़ा हो, वर्षा हो उनकी इस दिनचर्या में कोई फर्क नहीं पड़ता कुत्तों, वन्दरों, एवं भूखे इन्सानों को भोजन कराने में उन्हें अपनी बन्दगी से भी ज्यादा आनन्द महसूस होता था। एक सच्चे संत में जो लक्षण होने चाहिये वे सब कुन्दन दास जी महाराज में मौजूद थे। उनकी व्यक्तित्व की विशेषताओं को लिखने लगूं तो एक स्वतंत्र ग्रन्थ तैयार हो सकता है। विस्तार भय से उनके जीवन वृत को संक्षेप में ही लिखा है

शौचाशोच एवं पवित्रता–कुन्दनदास बाबा प्रायः स्वयं पकी (स्वयं प्रसाद तैयार करने वाले) महात्मा थे दूसरे के हाथों से बनाया भोग वे अपने गुरुदेव को बहुत कम अर्पण करते थे। एक बार अस्तल वाले हनुमान पर एक भण्डारा था। आप वैसे तो भण्डारों में कम ही आते-जाते थे लेकिन बाबा श्री जयरामदासजी के यहाँ अधिक प्रेमवश पहुँच जाया करते थे। आप पहुँच, हनुमान जी को दण्डवत प्रणाम करके, परिक्रमा देने लगे, परिक्रमा मार्ग में ही भण्डारा तैयार हो रहा था, वहाँ एक सन्यासी खड़ा था, उसे देखकर बाबा कुन्दन दास भड़क गये, परिक्रमा देकर बिना कुछ बताए वहाँ से वापिस चल दिये, जब लोगों को मालुम पड़ा तो बाबा जयरामदास पीछे

दोड़े, बोले–क्यों महाराज, वापिस कैसे चल दिये? क्या नाराजी है?''भण्डारा बना रहा है सो मेरे मतलब का नहीं'' ''अरे महाराज, वो तो वैसे ही वहाँ खड़ा है, उसने हाथ नहीं लगाया, आप वापिस चलो ऐसी क्या नाराजी है?'' लेकिन कुन्दनदास कहाँ मानने वाले थे, वापिस अपने स्थान पर आ गये। इससे यह सिद्ध होता है कि वे भण्डारे में प्रत्येक व्यक्ति के हाथ लगाने के विरुद्ध थे। अपने गुरुदेव के मन्दिर के भीतर एवं सिंह द्वार के भीतर के सारे प्रांगण में किसी को पेशाब नहीं करने देता तो उसी से उस मिट्टी को खुरचवा कर बाहर फिकवाते। नहीं मानता तो डण्डे से झुराई करने में तनिक भी नहीं झिझकते चाहे वह व्यक्ति कितने ही ऊँचे पद पर क्यों न हो। कई बार थानेदार, तहसीलदार जैसे अधिकारी भी उनकी चपेट में आ गये थे। सिंह द्वार से लेकर किले की उत्तरी पश्चिमी बुर्ज तक उनके गुरु की जागीर थी, इसे अपवित्र करने वाले की खैर नहीं।''

बस्ती से बाबा के भोग हेतु आई सामग्री को वे प्रायः वितरित कर देते थे, क्योंकि रास्ते चले भोग को वह प्रायः ठीक नहीं मानते थे। अपने कमण्डल के किसी को हाथ नहीं लगाने देते। अपनी चिलम को वे किसी दूसरे को नहीं फेरते थे। उनकी चिलम चाँदी की बनी हुई थी, जिसे भरकर अकेले ही पिया करते थे, इस प्रकार शोचाशोच का उन्हें विशेष ध्यान रहता था।

मंदिर निर्माण कार्य-जो पैसा हुजूर के नाम से उन्हें मिलता था, कहीं बाहर से आता, उसे सत्यनिष्ठा से मंदिर निर्माण कार्य में लगाते थे उन्होंने कभी भी सार्वजनिक रूप से मंदिर निर्माण हेतु चंदा एकत्रित नहीं किया। श्रद्धा-भक्ति से जो भी पैसा प्राप्त होता गया उसी को मंदिर निर्माण में लगाते गये। मंदिर के निर्माण में कुन्दन दास बाबा को योगदान उल्लेखनीय रहा था। जो भी धन आता उसका एक-एक पैसा मंदिर के निर्माण में लगता। अपने खर्चे के लिए वे भगत जगत को अलग से चेताया करते थे और स्वयं भी लोग उनके लिए दूध, चाय, कपड़े आदि की सेवा कर दिया करते थे। मंदिर निर्माण हेतु एवं बाबा के भोग-पूजा हेतु कुछ लोगों ने एक निश्चित रकम प्रति माह देने का संकल्प कर रखा था तथा चार दुकानों के किराये से कुछ आय हो जाती। इस प्रकार कम आमदनी से ही धीरे-धीरे मंदिर का पूर्ण निर्माण कराया गया तथा आगे के हिस्से को दुमंजिला बनवाय था। इसके अतिरिक्त मंदिर के सामने दुकानों का निर्माण कार्य तथा तपोस्थली का जीर्णोधार धूने को पक्का कराना तथा शाला के पूर्वी द्वार के स्थान पर एक दुकान निर्माण कार्य भी बाबा श्री कुन्दनदास जी महाराज ने कराये थे। उनके साथ सहयोगी के रूप में सेठ ब्रजलाल जी (विरजूभाई) का नाम भी उल्लेखनीय है। ये प्रायः उनके कैशियर रहा करते मंदिर के लिए सामग्री जुटाना तथा मजदूरों की व्यवस्था आदि के कार्यों को किया करते थे। इस प्रकार वही लगन एवं परिश्रम से बाबा कुन्दन दास जी महाराज ने अपने गुरुदेव की स्मृति में उनकी समाधि पर मंदिर एवं मूर्ति स्थापना का कार्य जैसा कि पूर्व में वर्णन किया जा चुका है कि मंदिर निर्माण योजना

श्री बाबा नारायण दास जी एवं राजाजी श्री गजेन्द्रसिंह जी के द्वारा बनी तथा मजबूत कंकरीट से नीवों को भरवाकर दासे तक का कार्य उन्हीं के मार्गदर्शन में हुआ। लेकिन शेष एवं महत्त्वपूर्ण कार्य बाबा कुन्दनदास जी महाराज ने ही कराया।

गुरु द्वारे का जोगी–एक विशेष महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हुजूर के अन्य शिष्य उनके सत्यलोक सिधारने के पश्चात् तप हेतु अन्यत्र चले गये और अपने शरीरों को भी लघुकाशी वैर से बाहर ही त्यागा लेकिन कुन्दनदास जी महाराज ने अन्तिम दम तक अपने गुरुदेव के द्वारे को नहीं छोड़ा वे दोनों समय की पूजा स्वयं ही किया करते थे। लेकिन जब उनका शरीर जीर्ण हो गया चलने-फिरने में असमर्थ हो गये तो, पूजा का कार्य दूसरे हाथों में गया इसका उन्हें बड़ा दुःख रहता। वे प्रायः श्री बल्लभ ''दाँतरा'' से पूजा करवा दिया करते थे। इस तरह उनका जरा-जीर्ण शरीर कुछ दिन तक चलता रहा।

मन्दिर का ट्रस्ट बनवाना-कुन्दनदास की जरा-जीर्ण काया देखकर हम कुछ लोगों ने विचार किया कि इनका शरीर पूरा होने के पश्चात् मंदिर की व्यवस्था का क्या होगा। क्योंकि कुन्दन दास ने विधिवत् कोई शिष्य नहीं बनाया। इस सम्बन्ध में हम उनसे कहा करते कि बाबा कोई शिष्य बना लो, जिससे आपके पश्चात् मंदिर की व्यवस्था एवं पूजा-अर्चना में व्यवधान नहीं आये। लेकिव वे कहा करते कि ''लाला, सव माल मारने वाले है, कोई जँचता तो है नहीं किसे शिष्य बनाऊँ। उनकी इच्छा थी कि ''कोई ब्राह्मण का लड़का होय तो उसे शिष्य बना लूं'' लेकिन ऐसा कोई समर्पित ब्राह्मण बालक नहीं मिला और ना ही उन्होंने कोई शिष्य बनाया। एक दिन मैंने तथा श्री दुर्गा चौधरी, रजनीकांत पटवारी। (बच्चू भाई) तथा अन्य लोगों ने कुन्दन दास बाबा को मंदिर का ट्रस्ट बनवाने के लिए प्रार्थना की, जिसे पहले तो उन्होंने नकार दिया ''क्या होता है ट्रस्ट? हमारे गुरुदेव का मंदिर तो ऐसे ही ठीक है।'' लेकिन बहुत समझाने के बाद कि आपके पश्चात् मंदिर देवस्थान विभाग में चला जायेगा तथा इसकी पूजा सरकारी पूजारी के हाथ चली जायेगी, मंदिर का विकास रुक जायेगा, इत्यादि बातों की गम्भीरता उन्हें समझाई तो एक दिन उन्होंने स्वयं ही कहा कि ''छोराओ! बनवाय देओ, कैसौ ट्रस्ट होय। उनकी अनुमति से कार्य आगे बढाया गया, इस कार्य में स्व. श्री दुर्गा प्रसाद जी चौधरी एवं स्व. रजनी कांत पटवारी (बच्चू भाई) आदि का सक्रिया योगदान रहा।'' बाबा श्री श्री 1008 श्री मनोहरदास जी महाराज जन हितकारी ट्रस्ट के निर्माण की योजना तैयार की गई। भरतपुर जाकर आवश्यक जानकारी ली गई। बाबा श्री कुन्दन दास जी महाराज से पूछा गया कि आप किस व्यक्ति को इस ट्रस्ट का सदस्य रखना चाहते हो, उन्होंने जिन-जिन व्यक्तियों के नाम का प्रस्ताव रखा उन्हें सूचना देकर मंदिर में बैठक की गई। ट्रस्ट निर्माण योजना की क्रियान्वति हेतु जो प्रथम बैठक रखी गई उसकी अध्यक्षता स्वयं बाबा श्री श्री 1008 कुन्दनदासजी महाराज ने की। ट्रस्ट का संविधान तैयार किया गया ''श्री मनोहर जन हितकारी ट्रस्ट'' के लिए संविधान निर्माता स्व.

श्री दुर्गा प्रसाद जी चौधरी थे जिन्होंने बाबा कुन्दन दास से परामर्श लेकर तथा उपस्थित सदरयों से विचार-विमर्श करके वर्तमान ट्रस्ट के संविधान को तैयार किया तथा उनकी एक प्रति, मंदिर प्रोपर्टी के नक्शे आदि आवश्यक कागजात तैयार करके देव स्थान विभाग को भिजवाये इस प्रकार बाबा कुन्दन दास जी महाराज ने अपने जीवन में ही मंदिर की सुचारु व्यवस्था एवं भावी विकास हेतु मंदिर का एक ट्रस्ट बनवा दिया। ट्रस्ट की अधिक जानकारी आगे के परिशिष्टों में दी जावेगी।

इस प्रकार बाबा कुन्दन दास अपने गुरु द्वारे का अन्तिम योगी था।

महा प्रस्थान–जब हम बाबा कुन्दनदास के पास जाते और और उससे पूछते कि गुरुदेव कुछ सुनाओ तो वे करते कि हमारे गुरुदेव एक पद बोला करते थे–

''मन मस्त भया अब को बोले।

घट ही में गंगा, घट ही में जमुना,

ताल तलैया मेरे को डोले॥

मन मस्त भया अब को बौले॥

कमती होय तौ लाऊँ तराजू

पूरौ होय तो, को तोले,

मन मस्त भया अब को बौले॥

इस प्रकार मस्ती में अपने गुरुदेव के चरणों में ध्यान लगाकर एक दिन आप भी ''आप'' में समा गये। हम प्रायः बाबा कुन्दनदासजी की जरा-जीर्ण अवस्था में उनके पास उनके हालचाल जानने के लिए तथा कोई आवश्यक सेवा बताने के लिए पहुँचा करते थे क्योंकि इनसे उठा-बैठ नहीं जाता था। एक दिन हम सभी साथियों ने मिलकर उनके स्थान को साफ किया उन्हें स्नान कराया तथा कपड़े बदलवाये आप भी बड़े ही आनन्द में थे। यह बात दिन के 12 या 1 बजे की रही होगी। हम उन्हें नहला धुला के अपने घरों पर चले गये। सायंकाल को हम आनंद मण्डल के सदस्यगण उन दिनों प्रायः अस्तल वाले हनुमान पर जाया करते थे। उस दिन सायं को जब हम अस्तल पर थे तो एक बस रुकी उसमें से हमें एक व्यक्ति ने सूचित किया कि बाबा कुन्दन दास जी महाराज ने अपना शरीर छोड़ दिया। हमें वहाँ आश्चर्य हुआ। सोचने लगे कि दोपहर को आप बिलकुल ठीक थे ऐसा कैसे हो सकता है। हम सभी तुरन्त बाबा के मन्दिर पर गये देखा तो भगत जनों द्वारा उनकी अन्तिम शव यात्रा के लिए डोला सजाया जा रहा था।

बाबा के शिष्य बाबा बृजलाल

बाबा श्री श्री 1008 श्री बृजलाल छाता (मथुरा) उत्तरप्रदेश के निवासी ये। बाबा की सेवा में रहा करते थे। बाबा भी इनको बहुत प्यार करते थे। ये बाबा के शिष्यों में एक थे। ये एक बहुत आला दर्जे के क्लार्नेट वादक थे। वैर का प्रसिद्ध बैंड मास्टर नेतराम कोली उन्हें अपना उस्ताद मानता था और कहता है कि यह कला मुझे बाबा बृजलाल की ही देन है। यह अक्सर बाबा की तपोस्थली धूना पर रहा करता था। भोजन बनाकर दिया करते थे। बाबा को इनके हाथ का बना प्रसाद विशेष पसन्द था। नहर के किनारे वाली धर्मशाला (मंगल कांरटेविल) में एक अलमारी में इनकी क्लार्नेट रखी रहती थी। कभी-कभी हुजूर महाराज उन्हें बुलाकर इनकी क्लार्नेट सुना करते थे और स्वयं ढोलक की ताल लगाते थे। दोनों गुरु शिष्यों की एक अनौखी जुगलवदी होती थी। अनेक लोगों ने इस दृश्य को देखा। ये आजीवन ब्रह्मचारी रहे और बाबा के बताये रास्ते पर चलकर इन्होंने सिद्धि प्राप्त की। इन्होंने लखनपुर गाँव के ऊपर पहाड़ में स्थित पीरीपोखर नामक एकान्त स्थान में रहकर तपस्या की। लखनपुर के रहने वाले अनेकों इनके भक्तगणों में बहुत सी आलौकिक घटनाओं के बारे में हमें सुनाया। जैसी रहनी-राहनी बाबा श्री मनोहर दास जी महाराज की थी ठीक वैसी ही रहनी-राहनी एवं मनोवृति इनकी भी हो गयी। हाथ में चिलम लम्बा घुटनों तक कुर्ता अचला एक हाथ में दण्ड कन्धों तक लम्बे बाल सिंहासन से बैठे हुए किसी अनन्त सत्ता में ध्यान भजन इनका व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली था। सभी विषयों से दूर हमेशा भगवान के भजन में मस्त रहना कभी किसी से कुछ नहीं चाहना। एकान्त सेवन करना दैव योग से प्राप्त हो जाये उसी में सन्तुष्ट रहना, सभी प्राणियों से स्नेह का व्यवहार रखना, अपने गुरु के बताये हुए सन्त लक्षणों को इन्होंने सांगोपांग अपने व्यवहार में उतार लिया था।

दोहा- दया गरीबी वंदगी, समता शील स्वभाव।

ऐते लक्षणा साधु के, कहेच कबीर विचार॥

दोहे के अनुसार उनके अन्दर सन्तों के सभी लक्षण विद्यमान थे। आप भूखे रहकर के दूसरों को खिलाना और हमेशा भजन में मस्त रहना इनके स्वभाव की मुख्य विशेषता थी। बाबा के परमधान सिधारने के दिन ये दिल्ली में थे इन्हें स्वप्न हुआ और तुरन्त ही वहाँ से चल दिये। वैर तो इन्हें गुरुदेव के सत्यलोक का समाचार सुना। ये बहुत दुःखी हुए। बाबा के अन्तिम संस्कार में सायं 4 बजे थे आप भी सम्मिलित हो गये। ये इनको गुरु भक्ति का ही उदाहरण था। ये श्री कुन्दन दास जी महाराज के साथ बाबा के अस्थि कलश को लेकर इलाहबाद त्रिवेणी में प्रवाहित करने हेतु गये। बयाना बस स्टेण्ड पर भी ये बहुत समय तक रहे। वहाँ भी इनके अनेकों सेवक हैं। बाबा श्री मनोहरदास की तरह लोगों ने इनमें भी अनेक प्रकार की चमत्कारिक घटनाएँ देखी थी। बयाना में इनके अनेकों सेवक हैं, एक बार कुछ लोग

वैर से इनके पास गये और बोले–कि महाराज अगहन सुदी छट्ट के दिन वैर पधारो बाबा की पुण्य तिथि है उसकी शोभा यात्रा निकाली जायेगी। आप भी पधारो ये बोले कि–"मैं एक दिन पहले अगहन सुदी पंचमी के दिन आ जाऊंगा।" बयाना में इनका एक पटवारी भक्त था। उसने बतलाया कि जिस दिन बाबा बृजलाल में सत्यलोक को प्रस्थान किया उस दिन हमने देखा कि अपने गुरुदेव श्री श्री 1008 बाबा श्री मनोहरदास जी महाराज का एक फोटो इन्होंने अपने सीने में लगा रखा था और ऊपर से कम्बल ओढ कर लम्बे पांव कर परम धाम को सिधार गये थे।

उस दिन अगहन सुदी पंचमी सन.....था। वैर से भक्त लोग गये और इनके पार्थिव शरीर को वैर से ले आये और वर्तमान में जहाँ पर इनकी समाधि बनी हुई वहीं इनका संस्कार कुन्दन दास जी महाराज ने अपने हाथों से किया तथा इनकी अस्थियों को भी तीर्थराज प्रयाग त्रिवेणी में प्रवाहित किया गया। बहुत बड़ा भण्डारा किया गया। सैंकड़ों साधुओं ने इसमें प्रसाद पाया तथा सम्पूर्ण बस्ती तथा बयाना, लखनपुर तथा अन्य क्षेत्रों से आये भक्तों में श्रद्धा भक्ति के साथ भण्डारे में सहयोग दिया। उल्लेखनीय है कि वर्तमान में बाबा मनोहरदासजी के मन्दिर की दक्षिण दिशा में बड़ के पेड़ के नीचे एक भव्य समाधि स्मारक बना हुआ है, जो इनकी गुरु भक्ति का ज्वलंत प्रमाण है।

बाबा के शिष्य बाबा समन्दर दास जी महाराज

बाबा श्री 1008 श्री बाबा मनोहरदास जी की शिष्य परम्परा में श्री समन्दर दास जी का नाम भी लोगों की जबान से सुना जाता है इनका तपो-स्थान फुलवाड़ी में सफेद महल के सामने कुण्डे के ऊपर एक झोंपड़ी में था। कभी-कभी महल में ये आसन जमा दिया करते थे। कथा-कीर्तन इत्यादि अनेक प्रकार के धार्मिक अनुष्ठान ये कराया करते थे। कहते हैं हलुए में भांग मिलाकर ये प्रसाद वितरित किया करते। इनके स्थान के आस-पास बन्दर और पक्षी आदि भी भांग युक्त हलुए का प्रसाद पाकर मस्त रहा करते थे। बाबा ने इनको भी सात नाम की दीक्षा दी थी। इनके समकालीन भक्तों से पूछने पर ज्ञात हुआ कि इनमें भी अनेक प्रकार की सिद्धियाँ का प्रभाव देखा गया ये सिद्धियाँ को काम में लेने लग गये थे। यह बात हुजूर महाराज बाबा मनोहरदास जी को पसंद नहीं आयी। उन्होंने कई बार चेतावनी दी कि संभल जाओ नहीं तो अनिष्ट हो जायेगा तुम अकाल मृत्यु से मारे जाओगे। अद्योगति को चले जाओगे लेकिन इन्होंने अपने गुरुदेव की चेतावनी को गम्भीरता से नहीं लिया और ये योग भ्रष्ट हो गये। यहाँ से छोड़कर भरतपुर चले गये वहाँ पर ये शराव पीने लगे और अनेक प्रकार की दुष्प्रवृतियों में फंस गये पं. रामकुमार जो नगर परिषद भरतपुर में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी थे, उन्होंने बताया कि हम नगर परिषद में बैठकर सुल्फे की चिलम बनाकर पी रहे थे, उसी समय समन्दर दास जी भी वहाँ आ पहुँचे और हमसे चिलम लेकर ज्योहिं इन्होंने जोर का कश खींचा, इनके पेट में आग लग गयी और ये तड़पने लगे और इनका प्रणान्त हो गया।

इनके देह त्यागा के बाद भरतपुर से चार आदमी ट्रक लेकर आये और बाबा श्री मनोहरदास जी महाराज से बोले कि "हुजूर आपका शिष्य समन्दर दास का शरीर पूरा हो गया है। आप भरतपुर पधारें।" बाबा बोले–"हाँ हाँ ले जाओ और जमुना जी में डाल देना, कच्छ मच्छ खा जायेंगे" उनके चले जाने के बाद बाबा बोले–"कि लाला! एक मियां का लड़का था जिसको हमने गुरनाम सुना दिया था थोड़ी उम्र लिखा के लाया अकाल मृत्यु से मारा गया"

उल्लेखनीय है कि समन्दरदास एक जाट घराने में पैदा हुए थे और महाराज की पलटन के बैंड में क्लार्नेट वादक थे। बाबा श्री मनोहरदास जी महाराज में अपार श्रद्धा थी। बाबा भी उसको प्रेम किया करते थे। उन्हें सात नाम की दीक्षा देकर अपना शिष्य बनाया था। गुरु कृपा से इन्हें सिद्धियाँ भी प्राप्त हुईं। लेकिन अपने गुरु महाराज की आज्ञाओं का उल्लंघन करने के कारण इनका पतन हुआ और अकाल मृत्यु के ग्रास बनें।

ऐसा करते हैं कि जब भरतपुर से इनको लेकर मधुरा जमुना जी में प्रवाहित करने के लिए ले गये और जमुनाजी में प्रवाहित कर दिया तो कच्छ मच्छों ने भी नहीं छुआ लोगों का कहना है कि अचानक हुजूर महाराज मनोहरदास जी महाराज वहाँ आ गये और कच्छ मच्छों को आदेश दिया कि "हाँ हाँ ये तुम्हारा भोजन है खींच ले जाओ।" कहते हैं कि इसके बाद एक बड़ा कछुआ आया और इनको खींच कर जमुना जी में अन्दर ले गया। इस प्रकार हुजूर की आज्ञा से इनका अन्तिम संस्कार जल समाधि सम्पन्न हुआ।

लोगों का कहना है कि बाबा को थोड़ी देर के लिए लोगों ने वहाँ देखा और इनके बाद वह अर्न्तध्यान हो गये।

गुरु मूरत मुख चन्द्रमा, सेवक नयन चकोर।
अष्ट प्रहर निरखत रहो, श्री गुरु चरनन की ओर॥

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

॥ इतिश्री॥

❑❑❑

Guru Vandanā (adorazione al Guru)

गुरु वन्दना

ॐ गुरु देव ब्रहम सच्चिदानन्द स्वरुप
आनन्द दाता कल्याणकारी, अग्नि में ज्योति में, प्रकाश में, अजर अमर अविनाशी
घट-घट के वासी
निराकार, निर्विकार, सर्वाधार, अन्तरयामी, अलख निरंजन, भव भय भंजन,
संकत मोचन वनवारी । देवेश्वर, जोगेश्वर, प्रनेश्वर, परमेश्वर, ईश्वर ।
ॐ गुरु देव ब्रहम, सच्चिदानन्द स्वरुप,
आनन्द घन भगवान् नमो नमः ॥
॥ श्री गुरु देव नमः ॥

Om guru deva brahma saccidānanda svarupa
Ānanda dātā kalyāṇakārī, agni meṃ jyoti meṃ, prakāśa meṃ, ajara amara avināśī
ghaṭa-ghaṭa ke vāsī
nirākāra, nirvikāra, sarvādhāra, antarayāmī, alakha niraṃjana, bhava bhaya bhaṃjana,
saṃkata mocana vanavārī | deveśvara, jogeśvara, praneśvara, parameśvara, īśvara |
Om guru deva brahma, saccidānanda svarupa,
Ānanda ghana bhagavān namo namaḥ ||
|| Śrī guru deva namaḥ ||

Saluti al Guru la cui forma è l'incarnazione di Sat-Chit-Ananda
(Esistenza - Coscienza - Beatitudine).
Dispensatore di felicità e prosperità, mio fuoco, mia luce, infinito ed immortale,
calmo, senza forma, senza mente, universale, onnisciente,
Tu sei il creatore, sei la paura della paura, mitigatore dei problemi.
Signore degli Dei, Signore degli Yogi, Signore della vita, Signore supremo, Dio.
Saluti al Guru la cui forma è l'incarnazione di Sat-Chit-Ananda
(Esistenza - Coscienza - Beatitudine).
I miei omaggi al Dio pieno di beatitudine.
I miei omaggi al Guru.

Salutations to the Guru whose form is the incarnation of Sat-Chit-Ananda
(Existence - Consciousness - Bliss).
Dispenser of happiness and prosperity, my fire, my light, infinite and immortal,
calm, formless, mindless, universal, omniscient,
You are the creator, you are the fear of fear, the reliever from troubles.
Lord of the Gods, Lord of the Yogis, Lord of life, Supreme Lord, God.
Salutations to the Guru whose form is the incarnation of Sat-Chit-Ananda
(Existence - Consciousness - Bliss).
My tributes to the God full of bliss.
My tributes to the Guru.

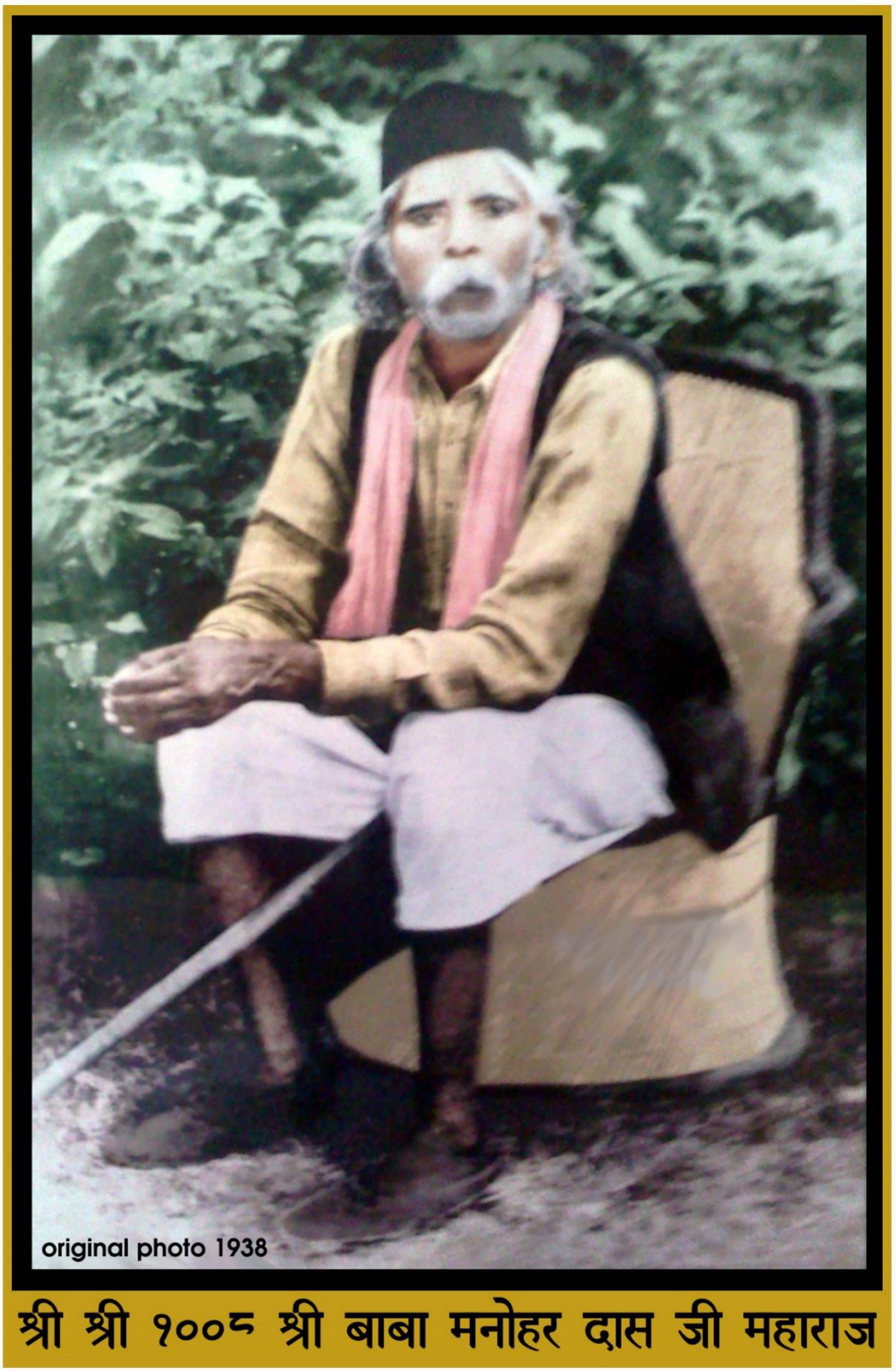

श्री श्री १००८ श्री बाबा मनोहर दास जी महाराज